ISSN 2349-0209 Volume-3/Issue-2 OCTOBER 2015

तुलनात्मक साहित्य और अनुवाद

डॉ. संगीता सक्सेना
सहायक प्राध्यापक, हिन्दी
म.ल.बाई कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, भोपाल

भूमिका

यदि भाषा में साहित्य के महत्व को जान लिया जाए, तो अनुवाद का महत्व बताने की कोई आवश्यकता न हो। साहित्य–सृजन मौलिक है और अनुवाद मूल की रचना। तुलनात्मक साहित्य के अध्ययन और मूल्यांकन में अनुवाद एक महत्वपूर्ण उपकरण है। अनुवाद एक साहित्यिक विधा है, किन्तु वह मौलिक साहित्य की श्रेणी में नहीं आता। "चूंकि एक भाषा के भाव–वैभव को ही नहीं, बल्कि उसके ध्वन्यात्मक प्रतीकों को भी दूसरी भाषा में यथावत् रूपांतरित और प्रतिस्थापित करना अनुवादक का लक्ष्य होता है, इसीलिए अनुवाद को "एक सांस्कृतिक सेतु" की संज्ञा भी प्राप्त हुई है।"1 एक ऐसी तकनीक माना गया है, "जिसका आविष्कार मनुष्य ने बहुभाषिक स्थिति की विडंबनाओं से बचने के लिए किया था।"2 इस तरह अनुवाद एक ऐसी खिड़की की तरह काम करता है जो दो या अधिक संस्कृतियों को एक–दूसरे के बरक्स खड़ा कर देती है। यह एक सांस्कृतिक विनिमय का स्रोत बन जाता है।

अनुवाद एक प्राचीन और महत्वपूर्ण भाषाई प्रकिया है, जिसके कारण मनुष्य न केवल दो समकालीन समाजों से जुड़ता है, बल्कि पूर्व–परंपरा से वर्तमान को जोड़ता भी है। यह साहित्य के दो वर्ग हैं ज्ञान का साहित्य और सर्जनात्मक साहित्य। ज्ञान के साहित्य में तथ्य और विचार निश्चित होते हैं इसलिए उसका अनुवाद आसान होता है अपेक्षाकृत सर्जनात्मक साहित्य के। सर्जनात्मक साहित्य, चाहे वह गद्य हो, कविता हो या नाटक हो, उसे अनूदित करने की प्रकिया जटिल होती है क्योंकि उसमें भावो और कल्पना की सूक्ष्मता और तारल्य निहित रहता है, जिसे रूपांतरित करना आसान नहीं है।

साहित्यानुवाद की पृष्ठभूमि

प्राचीन युगीन भारतीय साहित्य में संस्कृत, पालि, प्राकृत और अपभ्रंश भाषा में रचित साहित्य को किसी अन्य भाषा में अनूदित करने का बहुत अधिक प्रचलन नहीं था। इसके स्थान पर आर्ष ग्रंथों की व्याख्या भाष्य और संस्कृत ग्रंथों की व्याख्या के रूप में टीका अधिक लिखीं गईं।

पंचतंत्र का पहलवी भाषा में हकीम बुर्जोई द्वारा किया अनुवाद पहला अनुवाद है।3 इसके बाद आधुनिक युग में संपूर्ण वैदिक साहित्य, स्मृति–ग्रंथों के अनुवाद विदेशी भाषाओं, जैसे–जर्मन, फेंच, अंग्रेज़ी,, फारसी,, चीनी और सिंहली में अनूदित किया गया। उपनिषदो और सूत्र–साहित्य का अनुवाद अंग्रेंजी में और पुराण ग्रंथों का अनुवाद अंग्रेज़ी,, लेटिन, फेंच, इतालवी,, जर्मनी में किया गया।

संस्कृत साहित्य में मेघदूतम् का अनुवाद लगभग सभी प्रमुख भारतीय और विदेशी भाषाओं मे हो चुका है। ठीक यही बात अभिज्ञानशाकुंतलम् के लिए भी लागू होती है। पाश्चात्य परंपरा में भी धार्मिक साहित्य के अनुवाद से प्रारंभ होकर वर्जिल के इनीड, सेर्वांतेस दे सावेद्रा के डॅान क्विजोट, वर्जिल के डिवाइन कॉमेडी,, शेक्सपियर के नाटक हेमलेट, मैकबेथ, टॉल्सटॉय के वार एंड पीस से दॉस्तॉवस्की के क्राइम एंड पनिशमेंट तक एक लंबी यात्रा अनुवाद ने पूर्ण की है। इस दिशा में मैक्समूलर के प्रयास मूल्यवान हैं। विदेशी प्रकाशकों–प्रगति प्रकाशन, रादुका प्रकाशन,लोएब क्लासिक्स, पेंगुइन ओर एवरीमैन– ने इस ओर महत्वपूर्ण कार्य किया है।

बीज शब्द : भाषिक अंतरण, भावांतरण, पुनर्सजन।

उद्देश्य : साहित्यानुवाद केवल संप्रेषण मात्र नहीं होता उसमें अमूर्त अनुभूति का चित्रात्मक संवहन होता है। अतः साहित्यानुवाद की प्रक्रिया क्लिष्ट होती है। अनुवादक से कोई मौलिक चिंतन की अपेक्षा करना उचित नहीं है, क्योंकि वह केवल उसकी पुनर्रचना करता है। चूँकि शोधपत्र का कलेवर सीमित होता है, अतः इस शोधपत्र में दो भिन्न भाषाओं, अंग्रेजी और संस्कृत की कृतियों के कुछ प्रसंगों को लेकर उनकी अनुवाद प्रक्रिया को देखा गया है। साथ ही कहाँ अनुवाद प्रभावी हुआ है और कहाँ संप्रेषण नहीं हो पाता, इसकी पड़ताल करने का भी प्रयास किया गया है।

विश्लेषण :

साहित्यानुवाद का स्वरूप

साहित्यानुवाद एक महत्वपूर्ण प्रकिया है जिसके द्वारा किसी अन्य देश के साहित्य तक पहुँचा जाता है। देखा जाए तो मूल भाषा में पढ़ने का आनंद ही कुछ और है, किन्तु दूसरी भाषा का ज्ञान हो ही,, यह ज़रूरी नहीं है। यहीं पर अनुवाद की ज़रूरत महसूस होती है। लेकिन यही किसी अनुवादक की कसौटी भी है कि वह अपनी भावप्रवणता, कल्पनाशीलता और संवेदनशीलता से उस मूल रचना के सौंदर्य तक पहुँचा सके। देख जाए तो अनुवादक भी सृजन करता है, अंतर केवल यह है कि वह मूल का पुनर्सजक है। "अनुवादक के लेखन की सारी प्रकिया भी लगभग वही है, जो कि किसी रचनाकार की होती है। उसे लेखक की भाव भूमि पर पहुँचकर विषय के साथ पूरी तरह तादात्म्य स्थापित करके लेखक के समानांतर चिंतन करना पड़ता है। किसी साहित्यिक कृति के अनुवाद में तो उसे उन्हीं अनुभूतियों को जीना पड़ता है, जिन्हें कि रचना–प्रकिया के दौरान एक लेखक जीता है। इस दायित्व का निर्वाह सिर्फ वही अनुवादक कर सकता है, जिसमें एक कलाकार की तरह मूल कृति के सौंदर्य बिंदुओं को पहचानने की शक्ति तथा उसके मर्म तक पहुँचने की क्षमता हो।"4

साहित्यानुवाद की प्रक्रिया

किसी एक भाषा में रचे गए पाठ के संदेश को दूसरी भाषा में व्यक्त करने की प्रक्रिया कुछ विशिष्ट बिंदुओं पर आधृत होती है, जैसे –1. विश्लेषण, 2. अंतरण, 3. पुनर्गठन

साहित्यानुवाद की सामग्री

साहित्यानुवाद में मुख्य रूप से तीन विधाओं का चयन किया जाता है :–

1. कथा साहित्य का अनुवाद

2. नाट्य साहित्य का अनुवाद, और

3. काव्य साहित्य का अनुवाद

कथा साहित्य के अनुवाद की प्रक्रिया

समूचे साहित्य में कथा साहित्य का अनुवाद करना सबसे सरल होता है, इसका कारण संभवतः यह हो सकता है कि उपन्यास, कहानी, आदि में घटनाप्रधानता होने के कारण कथारस और घटना के घात प्रतिघात आकृष्ट करते हैं। यदि अनुवादक को स्रोत भाषा का अच्छा ज्ञान होगा तो वह अपने अनुवाद में मूल का सा प्रभाव ला सकने में सफल हो सकता है। इस तरह के अनुवाद में साधारण बोल–चाल की मुहावरेदार भाषा अच्छा प्रभाव डालती है। फिर भी यह तो ध्यातव्य है कि इसमें भी सतर्कता आवश्यक है। रचना में जहाँ तथ्यपरकता हो, वहाँ तदनुरूप एवं जहाँ प्रतीकात्मक और काव्यात्मक अभिव्यक्ति हो, वहाँ भावात्मक शैली का प्रयोग ही औचित्यपूर्ण होगा। इसी तरह उपन्यास का अनुवाद करते समय उसमें स्थानीयता और सामाजिक–सांस्कृतिक परिवेश का ध्यान रखना आवश्यक है। यदि इसमें असावधानी हो जाये तो मूल कृति के साथ अन्याय होने की संभावना रहती है।

कृष्णा सोबती के उपन्यास 'सूरजमुखी अंधेरे के' के शीर्षक का नामकरण कविता नागपाल ने **Blossoms in Darkness** किया है। उपन्यास के केंद्रीय भाव को लेखिका पकड़ नहीं पाई। बलात्कृता रत्ती का जीवन अंधेरे में विकसित हुआ है। उसके मन के अंधेरे ने उसे असामान्य बना दिया है। दिवाकर (सूरज का पर्याय) के संपर्क में आकर उसके भीतर की नारी सामान्य हो पाती है। अतः शीर्षक में आया हुआ सूरजमुखी शब्द सार्थक है, जो **Blossoms** में निहितार्थ संप्रेषित नहीं कर पाता। रूसी साहित्यकार लेव तोल्स्तोय के विश्वप्रसिद्ध उपन्यास अन्ना कारेनिना के अंग्रेज़ी अनुवाद के हिन्दी अनुवाद के कुछ अंश देखें –

" He begged pardon, and was getting into the carriage, but felt he must glance at her once more; not that she was very beautiful, not an account of the elegance and modest grace which were apparent in her whole figure, but because in the expression of her charming face, as she passed close by him, there was something peculiarly caressing and soft."5

उसने क्षमा माँगी और डिब्बे में जाने को हुआ, किन्तु उसने उस पर एक बार फिर नज़र डाल लेने की आवश्यकता अनुभव की। इसलिए नहीं कि वह बहुत सुन्दर थी, उस लावण्य और विनम्र सजीलेपन के कारण भी नहीं, जो उसके पूरे व्यक्तित्व में झलक रहे थे, बल्कि इसलिए कि यह नारी जब उसके पास से गुज़री, तो उसके चेहरे के भाव में कुछ विशेष स्नेह और कोमलता की अनुभूति हुई। 6
उपर्युक्त अंश एक समुचित अनुवाद का सुंदर उदाहरण हो सकता है।

नाट्यानुवाद की प्रक्रिया

नाटक के अनुवाद में प्रायः कठिनाई होती है, क्योंकि वह केवल संवादात्मक कथा नहीं है। वह एक संवादात्मक और कार्य–व्यापारमूलक कथा है, जिसमें अभिनेयता अनिवार्य है। यही कारण है कि अभिव्यक्ति के एक भिन्न माध्यम से जुड़ा होने के कारण नाट्य–सृजन एक कठिन प्रक्रिया है और एक भाषा से दूसरी भाषा में उसका अनुवाद और भी दुष्कर होता है। शेक्सपीयर के नाटक कठिन हैं किन्तु वहाँ अभिनेयता से अधिक कठिनाई उसकी भाषा में आती है। उनके नाटक हेमलेट का अनुवाद रांगेय राघव और अमृत राय और रघुवीर सहाय ने किया है। प्रख्यात नाट्य–आलोचक श्री नेमिचंद्र जैन ने इन अनुवादों पर अच्छी टिप्पणी की है – "पाँचवें–छठे दशकों में रांगेय राघव ने बहुत सारे नाटकों का अनुवाद बड़े यांत्रिक ढंग से फीके और निर्जीव गद्य में कर डाला। उन्हें पढ़कर शेक्सपीयर की काव्यात्मकता अथवा सूक्ष्म नाटकीयता का कोई परिचय नहीं मिलता।.... अमृत राय का " हैमलेट" का गद्य–अनुवाद रांगेय राघव से बेहतर है, पर उसमें भी सपाट और बनावटी भाषा के कारण अधिकतर स्थलों पर काव्यात्मकताा और नाटकीयता में कमी हुई है।"7 रांगेय राघव द्वारा किया हुआ अनुवाद शाब्दिक अधिक है तथा अर्थव्यंजना में बाधक है। उसकी तुलना में अमृत राय का अनुवाद बेहतर है। एक अंश देखें –

with all my love I do command me to you:
And what so poor a man as Hemlet is
May do to express his love and friending to you,
god willing, shall not lack. Let us go in togather ;
And still your fingers on your lips, I pray.
The time is out of joint : O cursed spite,
That ever I was born to set it right !
Nay, come, let,s go togather.8

मै अपने दिल की सब मुहब्बत के साथ खुद को तुम्हारे हवाले करता हूँ और हैमलेट जैसा ग़रीब आदमी जिस तरह भी तुम्हारे लिए अपनी मुहब्बत और दोस्ती का इज़हार कर सकता है उसमें भगवान ने चाहा तो कभी पीछे नहीं रहेगा। चलो, हम लोग साथ–साथ अंदर चलें और हाँ देखना, तुम्हारी उँगलियाँ होठों पर रहें; इतनी ही मेरी बिनती है। वक़्त का शीराज़ा बिखर गया है। किस बदज़ात ने कब का यह बैर चुकाया मुझसे जो मैं पैदा हुआ इस बिगड़े वक़्त को ठीक करने को।– छोडो, आओ चलें।9 इस अंश में The time is out of joint वाक्यांश के लिए वक़्त का शीराज़ा बिखर गया है का प्रयोग बहुत सुंदर बन पड़ा है।
शेक्यपियर के ही एक अन्य नाटक मैकबेथ का अनुवाद रांगेय राघव ने किया है–

The prince of Cumberland: that is a step,
On which I must fall down, or else o'erleap,
For in my way it lies. Stars hide your fires,
Let not light see my black and deep desires:
The eye wink at the hand; yet let that be,
Which the eye fears, when it is done to see.10

मैकबेथ : कम्बरलैंड का राजकुमार ? संभल जाओ मैकबेथ ! यह वह सीढ़ी है जिससे या तो तू नीचे गिर जाएगा या इसे छलॉग मारकर पार कर जाएगा। तेरे पथ की यही एक बाधा है। सितारों ! छिपा लो अपनी इस जगमगाती ज्योति को। मेरी इन काली और पाप से भरी गहरी लालसाओं को अपने इस प्रकाश में मत प्रकट होने दो। जब मेरे हाथों से काम पूरा हो जाए तब चाहे मेरी दोनों ऑखों के चिराग सदा के लिए बुझ जाएँ। हाँ, ये बुझ ही जाने चाहिए, क्योंकि इस काम के पूरा होने पर ये ऑखें भय के मारे इसे देख नहीं पाएँगी।11

उल्लेखित अंश में **my black and deep desires** के लिए मेरी इन काली और पाप से भरी गहरी लालसाओं को
का अनुवाद व्यंजकता लिये हुए है।

इस तरह देखा जाए तो नाट्यानुवाद में पात्र के व्यक्तित्व का, बोले गए संवादों में बलाघात का और उसके मनोसामाजिक, सांस्कृतिक परिवेश की समाहिति अनिवार्य है। साथ ही नाट्यानुवाद में भाषा ही नहीं,, वरन् भौगोलिक बदलाव भी होता है। अतः भाषा पर यह बड़ा दारोमदार आ जाता है कि वह एक ओर पात्रों के व्यक्तित्व को अनावृत्त कर सके तथा बोल–चाल की सहजता को भी आत्मसात् कर सके। यह भाषा ही होती है जो मूल के अनुवाद को पठनीय बनाती है किंतु वह भी कंटेंट तक अनुवादक की पहुँच पर निर्भर करती है।

काव्यानुवाद की प्रकिया

कविता अपने–आप में तरल और बिंबात्मक होती है। कंटेंट या विषयवस्तु और शैली– यह दोनों कविता के ताने–बाने है, जिन्हें ग्रहण कर अनुवाद या अनुवाद का प्रयत्न किया जा सकता है। काव्यानुवाद की प्रक्रिया वैसे ही है जैसे पारे को सहेजना। इसमें एक तथ्य सहायक हो सकता है – मानव चेतना में प्रवाहित वह भाव–स्रोत जो समान परिस्थिति में हर ह्रदय से फूट पड़ता है। उसके ज़रिये आस्वाद संभव है। कुछ उदाहरण प्रस्तुत हैं –

संस्कृत से हिन्दी

मेघैर्मेदुरमम्बरं वनभुवः श्यामास्तमालद्रुमै
र्नक्तं भीरुरयं त्वमेव तदिमं राधे! गृहं प्रापय ।।
इत्थं नन्दनिदेशतश्चलितयो : प्रत्यध्वकुंजद्रुमं
राधामाधवयोर्जयन्ति यमुनाकूले रह : केलय : ।। गीतगोविंद–जयदेव

मेघन तें नभ छाय रहे, बनभूमि तमालन सों भई कारी।
सॉझ समै डरिहैं, घर याहि कृपा करिकै पहुँचावहु प्यारी।।
यों सुनि नन्द–निदेश चले दोउ कुंजन में वृषभानु–दुलारी।
सोइ कालिन्दी के कूल इकन्त की,, केलि हरै भव–भीति हमारी।।12

चूंकि ब्रजभाषा की मिठास में उसकी कोमलकांत पदावली और वर्ण मैत्री निहित हैं, अतः अनुवाद करते समय उन्हीं वर्णों का प्रयोग किया गया है।

हिन्दी से अंग्रेज़ी

चाह गई चिंता गई, मनुवा बेपरवाह।
जिनको कछु ना चाहिए, वे साहन के साह।। – रहीम

श्री के. एल. व्यास ने इसका अंग्रेज़ी में अनुवाद किया है –

Desire is gone and anxiety is over; the mind is free from care.
Those who have no wants are the king of kings.13

इन पंक्तियों में वही सहजता है जो रहीम के शब्दों में है।

निष्कर्ष

कहने का तात्पर्य है कि साहित्य की हरेक विधा में अनुवाद की प्रक्रिया के कुछ विशिष्ट लक्षण होते हैं जिनमें तथ्यपरकता और वर्णन–क्षमता (कथा–साहित्य), सूक्ष्म भावानुभूति और नाटकीयता (नाटक),भावों के साधारणीकरण की क्षमता (कविता)– जैसे बिंदु महत्त्व रखते हैं। किसी भी अनुवाद की सार्थकता अनुवादक की भाषिक–क्षमता और भावांतरण के कौशल पर निर्भर करती है।

संदर्भ–संकेत

1 अनुवाद विज्ञानः सिद्धांत और प्रयोग–डॉ. नगेंद्र पृष्ठ संख्या–1 संपादक–डॉ.नगेंद्र प्रकाशक–हिंदी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, संस्करण 1993
2 अनुवादः सिद्धांत और प्रयोग– जी. गोपीनाथन,पृ. संख्या 9
3 अनुवाद विज्ञान : सिद्धांत एवं अनुप्रयोग, संपादक–डा. नगेंद्र
4,अनुवाद चिंतन– पृ. संख्या 55
5.Anna karenina page-58, P.B.D. publication, Gurgaon-122001
6 अन्ना कैरेनिना–पृ. संख्या 87– राजकमल,विश्व क्लासिक, नई दिल्ली
7 अनुवाद विज्ञानः सिद्धांत एवं अनुप्रयोग,संपादक– डॉ. नगेंद्र प्रकाशक–हिंदी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, संस्करण 1993
8 .HAMLET - page-33 edited by A.W. Verity, Cambridge 1989)
9. हैमलेट,अनुवादक–अमृत राय,. पृष्ठ संख्या–52 हंस प्रकाशन,इलाहाबाद, संस्करण–1982
10. MACBETH, page- 39 Rohan book Company,Year-2003
11. मैकबैथ–पृष्ठ संख्या–22, राजपाल एण्ड सन्ज, संस्करण–1993
12 गीतगोविंद–जयदेव अनुवाद–भारतेंदु हरिश्चंद्र पृ. संख्या–6,राजकमल प्रकाशन,संस्करण–1998
13.Poet Saints of India- page no.54 Edited by M. Sivaramkrishna & Sumita Roy.Sterling Publication, New Delhi.Edition 1998